विनाशक' के रूप में जाना जाता है क्योंकि उन्होंने माया रूपी चूहे की सवारी की अर्थात् उसे परख कर अपने वश में किया। गणेश के ध्यानरत आधे खुले नेत्र व गंभीर मुख-मुद्रा से उनकी 'एकाग्रता' व 'शान्ति' का पता पड़ता है, जो फिर विघ्नों को परखने व उनका विनाश करने के लिए आवश्यक भी है।

देखा जाये तो परिस्थिति का अस्तित्व मनुष्यों की अपनी-अपनी सोच पर निर्भर करता है। जो बात किसी एक के लिए परिस्थिति है वह दूसरे के लिए एक सामान्य बात है। संसार में लाखों ऐसे अपंग मनुष्य हैं जिन्होंने अपनी लगन व मेहनत से वो मुकाम प्राप्त किये हैं जो अच्छे हृष्ट-पुष्ट व सुविधा संपन्न मनुष्य प्राप्त नहीं कर पाए हैं। उन्होंने 'परिस्थिति' को ही आगे बढ़ने का प्रेरणास्त्रोत बनाया और वह परिस्थिति उनके लिए एक 'वरदान' बन गई जबकि कई स्वस्थ लोग मानसिक अपंगता के कारण पीछे रह जाते हैं।

सहनशीलता, विवेकशीलता, कर्मठता

परिस्थिति का सामना करने में मुख्य रूप से तीन गुणों का सहयोग होता है: सहनशीलता, विवेकशीलता और कर्मठता (कर्म में प्रवीणता)। ये तीनों गुण किसी भी परिस्थिति के आने पर शक्ति में बदल कर उससे मुकाबला करते हैं। 'सहनशीलता' एक दिव्य गुण है जो परिस्थिति के आने पर धैर्य के गुण का सहयोग लेकर सहनशक्ति में बदल जाता है और मन को उग्र, चंचल व दुखी नहीं होने देता। सहनशक्ति से बुद्धि को स्थिरता व एकाग्रता प्राप्त होती है और वह 'विकार-अधीन (मलीन)' न होकर 'विवेकाधीन (स्वच्छ)' हो जाती है। बुद्धि गलत निर्णय भी दे सकती है परन्तु विवेकशील मनुष्य के निर्णय, विवेकशक्ति के आधार पर होते हैं जो सर्वदा सही होते हैं। यदि 'विवेक' जग जाये तो मनुष्य की आधी इच्छायें व परिस्थितियों का आधा वेग यूं ही समाप्त हो जाये। सहनशक्ति व विवेकशक्ति के साथ 'कर्मण्यता' अर्थात् पूर्व निर्धारित कर्म या दैनिक कर्म में तत्पर रहना आवश्यक है क्योंकि परिस्थिति या माया सबसे पहले मनुष्य को कर्म से अलग कर देती है। यदि कर्म चलता रहे तो परिस्थिति कमज़ोर पड़ जाती है। वैसे भी परिस्थिति होती ही है अल्प अवधि वाली परन्तु इसके वश में होकर कर्म से ठहर जाने पर यह अपने पैर पसार लेती है। कर्मण्य रहने की शर्त यह है कि कर्म में प्रवीणता अर्थात् कर्मठता हो। इतिहास में कर्मठ वे माने गये हैं जो ईश्वर को मानते हुए भी पूजा अपने काम की किया करते थे और महान कहलाये। कर्म में निपुणता व रुचि न होने के कारण ही 'कर्मण्येबाधिता' अर्थात् 'कर्म में बाधा' पैदा होती है। गीता में वर्णित 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' का अर्थ है – 'तेरा कर्म करने में अधिकार है।' परन्तु, उस परिस्थिति के अधीन होकर, जिसके आने, न आने पर मनुष्य का कोई अधिकार नहीं है, जब कर्म करने के अधिकार को छोड़ दिया जाता है तो परिस्थिति की अनाधिकृत प्रवेशता हो जाती है। वैसे भी जिस पर काम (कर्त्तव्य) का जुनून सवार रहता है, जिसे अपने काम के अलावा इधर-उधर की सुध लेने की भी फ़ुर्सत नहीं, उसके पास परिस्थिति विरले ही आती है। (क्रमशः)

ग्लोबल हॉस्पिटल में महत्त्वपूर्ण चिकित्सा सर्जरी कार्यक्रमों की जानकारी

घुटने व कूल्हे के जोड़ प्रत्यारोपण सर्जरी सुविधा
(Regular Knee and Hip Replacement Surgery)
दिनांक : 23 से 26 अप्रैल, 2010
सर्जरी : डॉ. नारायण खण्डेलवाल, मुम्बई से कुशल व अनुभवी सर्जन
(Trained in U.K., Australia and Germany)
पूर्व जाँच के लिये केवल घुटने व कूल्हे के ऑपरेशन के इच्छुक रोगी संपर्क करें –
डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, फोन नं. 09413240131
फोन: (02974) 238347/48/49 **फैक्स** : 238570
ई-मेल : ghrcabu@gmail.com **वेबसाइट** : www.ghrc-abu.com